P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

आदिवासी लोकगीतों में ऐतिहासिक लोककथाओं की स्थिति – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

अनीता मीणा
शोध छात्रा,
संगीत विभाग,
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा,
राजस्थान, भारत

रौशन भारती
सह आचार्य,
संगीत विभाग
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान प्रदेश की प्रमुख जनजातियों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली 'मीणा' जनजाति प्राचीन काल से अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करती हुई निरन्तर अग्रसर हो रही है परन्तु 21वीं सदी में सभ्य समाज के साथ–साथ शिक्षा और रोजगार प्राप्त करने की होड़ में नई पीढ़ी जो शहरों में निवास करने लगी वे अपनी मूलभूत सभ्यता और संस्कृति से परिचित नहीं हो पा रहे हैं और स्वयं को अन्य सामाजिक परिवेश के अनुसार अपनाने लगे हैं जो इनकी सभ्यता एवं संस्कृति के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहा है। अतः वर्तमान में शिक्षित वर्ग को भी इस ओर एक आवश्यक पहल करने की आवश्यकता है जिससे ऐसे छिपे एवं नष्ट होती जा रही संस्कृतियों को संरक्षित किया जा सके।

मुख्य शब्द : ऐतिहासिक, लोकगीत, लोककथाऐं, प्राचीन, परम्पराऐं, संग्रहण, मौखिक, स्वरूप।

प्रस्तावना

राजस्थान में अनेक आदिवासी समुदाय प्राचीन समय से निवास करते रहे हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर प्रमुख आदिवासी समुदाय क्रमशः भील एवं मीणा है। मीणा समुदाय सबसे अधिक जनसंख्या वाला समूह है जो राजस्थान के लगभग सभी भागों में निवास करते हैं किन्तु इनकी सर्वाधिक जनसंख्या पूर्व रियासतों – जयपुर, सवाई माधोपुर, अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, कोटा, बूँदी, झालावाड़, टोंक, उदयपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा एवं सिरोही आदि में निवासरत है। इन क्षेत्रों को ही इनकी मूल भूमि माना जाता रहा है।

मीणा समुदाय राजस्थान का सबसे पुराना निवासी एवं अन्य जनजातियों का जनक माना गया है। इनकी बहुरंगी सांस्कृतिक धरोहर की अपनी अलग पहचान रही है, इनकी स्वच्छन्द, स्वाभिमानी जीवनशैली की रक्षा के लिए न केवल बाह्य ताकतों से सामना कर अपने देश व प्रदेश की रक्षा की बल्कि अपनी मूल संस्कृति और सामाजिक परम्पराओं को भी सुरक्षित रखने का प्रयास किया है।

मीणा सांस्कृतिक धरोहर में लोक संगीत सर्वोपरि है। लोक संगीत में लोकगीत अटूट रूप से जुड़े हुए है। इन गीतों में कथा, स्वर, लय, ताल आदि सभी सम्मिलित होते हैं। इनके गायन द्वारा शाब्दिक चित्रण बड़ा सहज भाव से व्यक्त होता है। प्राचीनकाल से ही लोकगीत मीणा समाज में जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं चाहे मांगलिक कार्य हो या उत्सव, देवी–देवताओं की पूजा या किसी संस्कार, जीवन के प्रत्येक पहलु से सम्बन्धित अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति ये इन्हीं लोकगीतों के माध्यम से करते हैं। इन लोकगीतों ने ही मीणा जाति की प्राचीन परम्पराओं और इतिहास को अभी तक संजोए रखा है।

उदाहरण स्वरूप – "लोहागढ़ चन्द्रसी राजा पर मीणा लोकगीत"

नारायण मनाऊँ सदा भजन करूँ छूँ मन में,
राणी मलियागिरी की साख खाऊँ पंचन में,
एक समय लोहागढ़ में हुयो चन्द्रसी राजा
ऊके बाजै राग छत्तीसूँ बाजा
राजा का सुतेड़ा सुरंग लोक में छाया
ठाकुर बीड़ा तो फेर्‌या ज्याने देव रे शनिसर ठाढा
बीड़ा उठार जाँचबे आया
आर राजा सूँ आमकाश में आ बतलाया
राजा कॉई देणों हो सो देदे
थारा कदका तो खाऊँ नोहरा
सुण ले रे चन्द्रसी राजा मलियागिरी का ओरा (1)
सतवादी राजा जग में जीणा थोड़ा
म्हारा सायर नीर का ओ भगवान मिला दिया जोड़ा
राजा उठ बोल्यो बामण मन म हो सो भागो
राजा बन भर्‌या, बामण कड़ी नजर कर झाँक्यो
बैठण वाली गाड़ी ल्यूँ लो, राज पाट सारो ही ल्यूँ लो
दौन्यूँ कंवर गोद ल्यूँ लो,

राणी मलियागिरी को डोलो ल्यूँ लो
सुण ले रे चन्द्रसी राजा मलियागिरी का ओरा (2)
सतवादी राजा जुग में जीणा थोड़ा
म्हारा सायर नीर का ओ राम भगवान मिला दिया जोड़ा
म्हारा सायर नीर का राम प्रभु मिला दिया जोड़ा
सतवादी राजा उतर महल सूँ आया
ऊका भूरा बदन में बद स्याही रंग फर आया
राजा–राणी दोन्यूँ ऊबा चौबारा म झाँके
अर वाँका सत तुल रया छा धर्म काँटे
अर धोका सूँ लूट्यो बामण दीखे छ बड़ो ढ़ोकरो
सुण ले रे राजा मलियागिरी को ओरा
सतवादी राजा जुग में जीणा थोड़ा
म्हारा सायर नीर का ओ भगवान
राम मिला दिया जोड़ा
म्हारा सायर नीर का राम प्रभु ने मिला दिया जोड़ा (3)
राजा राणी दोन्यूँ लियो जाबा को गेलो
लोग खण्ड–खण्ड का है गियो भेलो
बामण उठ बोल्यो राणी महिलयागिरी
बहण छ धर्म की म्हारी
दोन्यूँ कंवरा ने ले ज्या राजा, लेजा लार तुम्हारी
म्हारी राजी खुशी सूँ कर दिया लार तुम्हारी
ओ है गा छाला, अर बाकी दशा फरी
छ लख्यो कर्म को बीरा
सुण लेरे चन्द्रसी मलियागिरी का ओरा (4)
ऊँडा सूँ राजा आगे ने पाँव उठायो
ऊँका देव रे शनिसर ने ठण्डो पाणी ल्यायो
राजा पाणी पीओ मेरो
अरे मैंने अन्न खायो तेरो
अरे राजा थे कैयाँ बण रिया छ भोला
बामण ने थाँके साथ बुरी करे छ गोला
ऊँडा सूँ राजा ने पाँव उठायो
छल गिरो बामण वांगा ने छल ल्यायो
राजा भी परगो, थे भी परगो राणी
अरे इयाँयी डोलो भर जंगल में ऊबाणी
गंगा माता बचन निभा दे म्हारो
नहीं ठोकर सूँ नीर सुखा द्यूँ थारो
अतरा में गंगा सेंस धार चढ़ आई
अर राजा भी बह गो, राणी भी दीखी नाही
अर दोन्यूँ कँवरा का पलड़ा बहगा ऊबी दीखी नाही
अर राणी ने प्रजापत लेगो
राजा न लेग्यो बणायो बोराँ
सुण ले रे चन्द्रसी मलियागिरी का ओरा (5)
सतवाही राजा जुग में जिणा थोड़ा,
म्हारा सायर नीर का ओ राम भगवान मिला दिया जोड़ा
म्हारा सायर नीर का ओ राम प्रभु मिला दिया जोड़ा,
सत मत छोड़ सूरमा सत छोड़्या पथ जाय
सत की बांदी लक्ष्मी फेर मिलगी आय।

(प्रभुनारायण मीणा, जयपुर, आदिवासी लोक कलाकार से सुनकर लिखा गया)

अध्ययन का उद्देश्य

समाज अपनी परम्पराओं से बँधा होता है, उसके रीति–रिवाज, रहन–सहन, खान–पान, विचार–विश्वास, नियम–कानून, पर्व–त्यौहार, भाषा–साहित्य, नृत्य–गीत जैसे तमाम क्रिया–कलापों से उनकी संस्कृति मूर्त्त और अभिव्यक्त होती है। यह एक ऐसी चीज है जो जल्दी बदलती नहीं। इसी क्रम में जनजातीय लोकसंगीत की ओर दृष्टि डालने पर हमें देखने को मिलता है कि उनका स्वरूप आज भी उसी रूप में संरक्षित है।

आदिवासी समाज की वर्तमान में एक जो बड़ी समस्या है, वह है शिक्षित लोगों की अपने समाज और संस्कृति के प्रति हीनभावना। दूसरी समस्या, सभ्य समाज आदिवासियों की संस्कृति के बारे में कोई गहरी जानकारी नहीं रखता उनका एक नितांत अलग दृष्टिकोण आदिवासियों के बारे में बना हुआ है।

अतः इस शोध–पत्र के माध्यम से आदिवासी लोकगायन शैली की वर्तमान स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जो प्राचीन कथाओं को आज भी लोकगायन के माध्यम से संरक्षित करने का कार्य कर रहे हैं।

साहित्यावलोकन

लोक संस्कृति विषय से सम्बन्धित अनेक विद्वानों द्वारा अनेक शोध कार्य किए गए हैं जिनके माध्यम से सटीक जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। विशेष रूप से जब राजस्थान के सांस्कृतिक क्षेत्र पर दृष्टि डालने की बात आती है तो इस क्षेत्र में अनेक कार्य किए गए हैं परन्तु लोक संगीत का क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है जहाँ आज भी और अधिक कार्य करने की आवश्यकता महसूस की जाती है। क्योंकि लिखित साहित्य की यहाँ उपलब्धता अत्यधिक कम है परन्तु फिर भी प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार लेकर, इन्टरनेट के माध्यम से तथा पत्र–पत्रिकाओं में छपे संस्मरणों के द्वारा सटीक जानकारी उपलब्ध करवाने का प्रयास किया गया है। जिससे आगे भी आदिवासियों के लोकसंगीत, लोकगीत, लोककथाओं आदि क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त हो पाएगी।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात् आदिवासियों ने भी अपने जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सभ्य समाज के साथ शिक्षा, रोजगार प्राप्त करने का प्रयास करना आरम्भ किया और इसी के चलते वे धीरे–धीरे अन्य सभ्यताओं को अपनाने लगे परिणामस्वरूप आदिवासियों में एक वर्ग शिक्षित वर्ग हो गया जो अपनी प्राचीन संस्कृति को ही हेय दृष्टि से देखने लगा।

आज जो आदिवासी रोजगार प्राप्त कर शहरों की ओर पलायन कर चुके हैं वे अपनी संस्कृति को भूलकर अन्य संस्कृतियों को अपनाकर उनके अनुसार ही ढलता जा रहा है जो मीणा आदिवासियों के सांस्कृतिक संरक्षण हेतु अत्यधिक हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं। अतः अभी से समय रहते ऐसे क्षेत्रों की ओर ध्यान देने की अत्यधिक आवश्यकता है जिससे अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता को मूल स्वरूप में निरन्तर आगे की पीढ़ियों तक स्थानान्तरित किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अरावली उद्घोष, जनवरी 1995, पृ. 62–63*
2. *अरावली उद्घोष, जनवरी 1995, पृ. 77–79*
3. *अरावली उद्घोष, जनवरी 1995, पृ. 28–36*
4. *शुक्ल हीरालाल, आदिवासी संस्कृति, संगीत एवं नृत्य पृ. 14*
5. *मीणा, प्रभूनारायण, आदिवासी लोक कलाकार, जयपुर साक्षात्कार एवं दूरभाष के माध्यम से प्राप्त जानकारी*
6. *मीणा, डॉ. गंगासहाय, सहआचार्य, हिन्दी विभाग, जवाहर लाल नेहरू (नई दिल्ली) इन्टरनेट के माध्यम से प्राप्त जानकारी*
7. *राजस्थान में आदिवासियों की स्थिति, विकीपीडिया इन्टरनेट*
8. *वर्मा पथिक, हमारी दुनिया हमारे लोग, अरावली उद्घोष, 1998, पृ. 9*